

كَفَرُوا وَإِبَاعِمِلُوا وَلَنْدِيَقَهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ٥٠ وَإِذَا أُنْعَمَ عَلَىٰ

काफ़िरो को जो उन्हों ने किया¹²⁸ और ज़रूर उन्हें गाढ़ा अज़ाब चखाएंगे¹²⁹ और जब हम आदमी पर एहसान

الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَتَأْبَجَانِبِهِ ٥١ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُودَعَاءٍ عَرِيضٍ ٥١

करते हैं तो मुंह फेर लेता है¹³⁰ और अपनी तरफ़ दूर हट जाता है¹³¹ और जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है¹³² तो चौड़ी दुआ वाला है¹³³

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانُوا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهِ مِنْ أَضَلِّ مِمَّنْ هُوَ

तुम फ़रमाओ¹³⁴ भला बताओ अगर यह कुरआन **اللَّهُ** के पास से है¹³⁵ फिर तुम इस के मुन्किर हुए तो उस से बढ़ कर गुमराह कौन जो

فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ٥٢ سُرِّيهِمْ أَيْتِنَا فِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ

दूर की ज़िद में है¹³⁶ अभी हम उन्हें दिखाएंगे अपनी आयतें दुनिया भर में¹³⁷ और खुद उन के आपे में¹³⁸ यहां तक कि

يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ٥٣ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ٥٣

उन पर खुल जाए कि बेशक वोह हक़ है¹³⁹ क्या तुम्हारे रब का हर चीज़ पर गवाह होना काफ़ी नहीं

أَلَا إِنَّهُمْ فِي مَرِيَّةٍ مِّنْ لِّقَاءِ رَبِّهِمْ ٥٤ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ٥٤

सुनो उन्हें ज़रूर अपने रब से मिलने में शक़ है¹⁴⁰ सुनो वोह हर चीज़ को मुहीत है¹⁴¹

﴿ ٥٣ آياتها ﴾ ﴿ ٢٢ سُورَةُ الشُّورَى مَكِّيَّةٌ ٦٢ ﴾ ﴿ ٥٤ رُكُوعَاتُهَا ٥ ﴾

* सूरए शूरा मक्किय्या है, इस में तिरपन आयतें और पांच रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

128 : या'नी उन के आ'माले कबीहा और उन के आ'माल के नताइज और जिस अज़ाब के वोह मुस्तहिक़ हैं उस से उन्हें आगाह कर देंगे ।

129 : या'नी निहायत सख़्त । 130 : और उस एहसान का शुक्र बजा नहीं लाता और उस ने'मत पर इतराता है और ने'मत देने वाले परवर्दगार

को भूल जाता है । 131 : यादे इलाही से तकब्बुर करता है । 132 : किसी किसम की परेशानी बीमारी या नादारी बग़ैरा पेश आती है 133 :

ख़ूब दुआएं करता है रोता है गिड़गिड़ाता है और लगातार दुआएं मांगे जाता है । 134 : ऐ मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ मक्कए मुकर्रमा के

कुफ़फ़ार से 135 : जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं और बराहीने क़द़य्या साबित करती हैं । 136 : हक़ की मुखालफ़त

करता है । 137 : आस्मान व ज़मीन के अक्तार में, सूरज, चांद, सितारे, नबातात, हैवान येह सब उस की कुदरत व हिकमत पर दलालत करने

वाले हैं । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इन आयत से मुराद गुज़री हुई उम्मतों की उजड़ी हुई बस्तियां हैं जिन से अम्बिया

की तकज़ीब करने वालों का हाल मा'लूम होता है । बा'जु मुफ़स्सरीने ने फ़रमाया कि इन निशानियों से मशरिफ़ो मग़रिब की वोह फुतूहात मुराद

हैं जो **اللَّهُ** तआला अपने हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ और उन के नियाज मन्दों को अन्क़रीब अता फ़रमाने वाला है । 138 : उन की हस्तियों

में लाखों लताइफ़ सन्अत और बे शुमार अज़ाइबे हिकमत हैं, या येह मा'ना हैं कि बद्र में कुफ़फ़ार को मग़लूब व मक्हूर कर के खुद उन के अपने

अहवाल में अपनी निशानियों का मुशाहदा करा दिया, या येह मा'ना हैं कि मक्कए मुकर्रमा फ़तह फ़रमा कर उन में अपनी निशानियां जाहिर

कर देंगे । 139 : या'नी इस्लाम व कुरआन की सच्चाई और हक़कानियत उन पर जाहिर हो जाए । 140 : क्यूं कि वोह बअूस व कियामत के काइल नहीं हैं । 141 : कोई चीज़ उस के इहातए इल्मी से बाहर नहीं और उस के मा'लूमात ग़ैर मुतनाही हैं । 1 : सूरए शूरा जुम्हूर के नज़्दीक

حَمَّ ١ عَسَقَ ٢ كَذَلِكَ يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ ٣

यूँही वह्य फ़रमाता है तुम्हारी तरफ़² और तुम से अगलों की तरफ़³

اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٣ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ٤ وَهُوَ

अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत वाला उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वोही

الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ٥ تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلَائِكَةُ

बुलन्दी व अज़मत वाला है करीब होता है कि आस्मान अपने ऊपर से शक हो जाए⁴ और फिरश्ते

يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ٦ إِلَّا إِنْ

अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते और ज़मीन वालों के लिये मुआफ़ी मांगते हैं⁵ सुन लो बेशक

اللَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ٥ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ

अल्लाह ही बख़्शने वाला मेहरबान है और जिन्होंने ने अल्लाह के सिवा और वाली बना रखे हैं⁶

اللَّهُ حَفِيفٌ عَلَيْهِمْ ٧ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ٨ وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا

वोह अल्लाह की निगाह में हैं⁷ और तुम उन के ज़िम्मेदार नहीं⁸ और यूँही हम ने

إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ يَوْمَ

तुम्हारी तरफ़ अरबी कुरआन वह्य भेजा कि तुम डराओ सब शहरों की अस्ल मक्का वालों को और जितने उस के गिर्द हैं⁹ और तुम डराओ इकठे

الْجَبْعِ لَا يَأْتِي فِيهِ ٩ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ١٠ وَلَوْ

होने के दिन से जिस में कुछ शक नहीं¹⁰ एक गुरौह जन्त में है और एक गुरौह दोज़ख में और

شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يَدْخُلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ١١

अल्लाह चाहता तो उन सब को एक दीन पर कर देता लेकिन अल्लाह अपनी रहमत में लेता है जिसे चाहे¹¹

मक्किय्या है और हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهما के एक कौल में इस की चार आयतें मदीनए तय्यिबा में नाज़िल हुई जिन में की पहली "قُلْ لَأَسْأَلَنَّكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا" है। इस सूत में पांच रूकूअ तिरपन आयतें आठ सो साठ कलिमे और तीन हज़ार पांच सो अठासी हर्फ हैं। 2 : ग़ैबी ख़बरें। (غابرات) 3 : अम्बिया عليهم السلام में से वह्य फ़रमा चुका। 4 : अल्लाह तआला की अज़मत और उस के उलुव्हे शान से। 5 : या'नी ईमानदारों के लिये। क्यूं कि काफ़िर इस लाइक़ नहीं हैं कि मलाएका उन के लिये इस्तिफ़ार करें, येह हो सकता है कि काफ़िरों के लिये येह दुआ करें कि उन्हें ईमान दे कर उन की मग़िफ़रत फ़रमा। 6 : या'नी बुत जिन को वोह पूजते और मा'बूद समझते हैं। 7 : उन के आ'माल, अफ़ाल उस के सामने हैं, वोह उन्हें बदला देगा। 8 : तुम से उन के अफ़ाल का मुआख़ज़ा न होगा। 9 : या'नी तमाम अ़ालम के लोग उन सब को। 10 : या'नी रोज़े क़ियामत से डराओ जिस में अल्लाह तआला अब्वलीन व आख़िरीन और अहले आस्मान व ज़मीन सब को जम्अ फ़रमाएगा और इस जम्अ के बा'द फिर सब मुतफ़र्रिक होंगे। 11 : उस को इस्लाम की तौफ़ीक़ देता है।

لَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ ۖ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ ۗ اللَّهُ

इस में फूट न डालो²⁶ मुशिरकों पर बहुत ही गिरां है वोह²⁷ जिस की तरफ़ तुम उन्हें बुलाते हो और **अल्लाह**

يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ ۗ ﴿١٣﴾ وَمَاتَفَرَّقُوا

अपने करीब के लिये चुन लेता है जिसे चाहे²⁸ और अपनी तरफ़ राह देता है उसे जो रुजूअ लाए²⁹ और उन्होंने ने फूट न डाली

إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعِيَابِيْنَهُمْ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ

मगर बा'द इस के कि उन्हें इल्म आ चुका था³⁰ आपस के हसद से³¹ और अगर तुम्हारे रब की एक बात

رَبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى لِّقَضَىٰ بَيْنِهِمْ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكُتُبَ

गुज़र न चुकी होती³² एक मुकर्रर मीआद तक³³ तो कब का उन में फैसला कर दिया होता³⁴ और बेशक वोह जो उन के बा'द किताब के वारिस हुए³⁵

مِنْ بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۗ ﴿١٤﴾ فَلَيْدِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَا

वोह इस से एक धोका डालने वाले शक में हैं³⁶ तो इसी लिये बुलाओ³⁷ और साबित क़दम रहो³⁸ जैसा

أُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ ۗ وَقُلْ أَمْتُ بِهَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ

तुम्हें हुकम हुवा है और उन की ख्वाहिशों पर न चलो और कहो कि मैं ईमान लाया उस पर जो कोई किताब **अल्लाह**

كِتَابٍ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۗ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۗ لَنَا أَعْمَالُنَا

ने उतारी³⁹ और मुझे हुकम है कि मैं तुम में इन्साफ़ करूँ⁴⁰ **अल्लाह** हमारा तुम्हारा सब का रब है⁴¹ हमारे लिये हमारा अमल

وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۗ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۗ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا وَإِلَيْهِ

और तुम्हारे लिये तुम्हारा किया⁴² कोई हुज्जत नहीं हम में और तुम में⁴³ **अल्लाह** हम सब को जम्अ करेगा⁴⁴ और उसी की

की उम्मतों के लिये यकसां लाज़िम हैं । 26 : हज़रत अलिये मुर्तज़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَىٰ وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** ने फ़रमाया कि जमाअत रहमत और फुर्कत अज़ाब

है । खुलासा येह है कि उसूले दीन में तमाम मुसल्मान ख़्वाह वोह किसी अहद या किसी उम्मत के हों यकसां हैं इन में कोई इख़िलाफ़ नहीं, अलबत्ता अहकाम में उम्मतें ब ए'तिबार अपने अहवाल व खुसूसिय्यात के जुदागाना हैं, चुनान्चे **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया :

“لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَا جُنَا” (हम ने तुम सब के लिये एक एक शरीअत और रास्ता रखा) 27 : या'नी बुतों को छोड़ना और तौहीद इख़्तियार

करना । 28 : अपने बन्दों में से उसी को तौफीक़ देता है । 29 : और उस की इत्ताअत क़बूल करे । 30 : या'नी अहले किताब ने अपने अम्बिया

के बा'द जो दीन में इख़िलाफ़ डाला कि किसी ने तौहीद इख़्तियार की कोई काफ़िर हो गया वोह इस से पहले जान चुके थे कि इस

तरह इख़िलाफ़ करना और फ़िर्का फ़िर्का हो जाना गुमराही है लेकिन बा वुजूद इस के इन्हों ने येह सब कुछ किया 31 : और रियासत व नाहक

की हुकूमत के शौक में । 32 : अज़ाब के मुअख़्ख़र फ़रमाने की 33 : या'नी रोज़े क़ियामत तक 34 : काफ़िरों पर दुन्या में अज़ाब नाज़िल फ़रमा

कर । 35 : या'नी यहूदो नसारा 36 : या'नी अपनी किताब पर मज़बूत ईमान नहीं रखते या येह मा'ना हैं कि वोह कुरआन की तरफ़ से या

सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तरफ़ से शक में पड़े हैं । 37 : या'नी उन कुफ़्फ़र के इस इख़िलाफ़ व परागन्दगी की वज्ह

से उन्हें तौहीद और मिल्लते हनीफ़ियह पर मुत्तफ़िक्क़ होने की दा'वत दो । 38 : दीन पर और दीन की दा'वत देने पर । 39 : या'नी **अल्लाह**

तआला की तमाम किताबों पर, क्यूं कि मुत्तफ़रिक्कीन बा'ज़ पर ईमान लाते थे और बा'ज़ से कुफ़र करते थे । 40 : तमाम चीजों में और जमीअ

अहवाल में और हर फैसले में । 41 : और हम सब उस के बन्दे । 42 : हर एक अपने अमल की जज़ा पाएगा । 43 : क्यूं कि हक़ ज़ाहिर

الْمَصِيرُ ١٥ وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتَجِيبَ لَهُ

तरफ़ फिरना है और वोह जो **अल्लाह** के बारे में झगड़ते हैं बा'द इस के कि मुसलमान उस की दा'वत कबूल कर चुके⁴⁵

حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ١٦

उन की दलील महज़ बे सबात है उन के रब के पास और उन पर ग़ज़ब है⁴⁶ और उन के लिये सख़्त अज़ाब है⁴⁷

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْبَيِّنَاتِ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ

अल्लाह है जिस ने हक़ के साथ किताब उतारी⁴⁸ और इन्साफ़ की तराजू⁴⁹ और तुम क्या जानो शायद

السَّاعَةَ قَرِيبٌ ١٤ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا وَالَّذِينَ

क़ियामत क़रीब ही हो⁵⁰ इस की जल्दी मचा रहे हैं वोह जो इस पर ईमान नहीं रखते⁵¹ और जिन्हें

أَمْؤُا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ١٥ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ

उस पर ईमान है वोह उस से डर रहे हैं और जानते हैं कि बेशक वोह हक़ है सुनते हो बेशक जो

يَسَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ١٨ اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ

क़ियामत में शक करते हैं ज़रूर दूर की गुमराही में हैं **अल्लाह** अपने बन्दों पर लुत्फ़ फ़रमाता है⁵² जिसे चाहे

مَنْ يَشَاءُ ١٧ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ١٩ مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ

रोज़ी देता है⁵³ और वोही कुव्वत व इज़्ज़त वाला है जो आख़िरत की खेती चाहे⁵⁴

نَزِدْلَهُ فِي حَرْثِهِ ٢٠ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ

हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं⁵⁵ और जो दुन्या की खेती चाहे⁵⁶ हम उसे उस में से कुछ देंगे⁵⁷ और आख़िरत

हो चुका "وَهَذِهِ آيَةٌ مِّنْ سُوْحَةِ بَايَةِ الْقِتَالِ" (और येह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ है) 44 : रोज़े क़ियामत । 45 : मुराद उन झगड़ने वालों

से यहूद हैं, वोह चाहते थे कि मुसलमानों को फिर कुफ़्र की तरफ़ लौटाएं इस लिये झगड़ा करते थे और कहते थे कि हमारा दीन पुराना हमारी

किताब पुरानी हमारे नबी पहले, हम तुम से बेहतर हैं । 46 : ब सबब उन के कुफ़्र के । 47 : आख़िरत में । 48 : या'नी कुरआने पाक जो क़िस्म

क़िस्म के दलाइल व अहक़ाम पर मुश्तमिल है । 49 : या'नी उस ने अपनी कुतुबे मुनज़ज़ला (नाज़िल कर्दा किताबों) में अद्ल का हुक्म दिया ।

बा'ज़ मुफ़स्सरीन ने कहा है कि मुराद मीज़ान से सव्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की जाते गिरामी है । 50 शाने नुज़ूल : नबिय्ये करीम

ने क़ियामत का ज़िक्र फ़रमाया तो मुशिरकीन ने ब तरीके तक्ज़ीब कहा कि क़ियामत कब होगी ? इस के जबाब में येह आयत

नाज़िल हुई । 51 : और येह गुमान करते हैं कि क़ियामत आने वाली ही नहीं, इसी लिये ब तरीके तमस्खुर जल्दी मचाते हैं । 52 : बे शुमार

एहसान करता है नेकों पर भी और बंदों पर भी हत्ता कि बन्दे गुनाहों में मशगूल रहते हैं और वोह उन्हें भूक से हलाक नहीं करता । 53 : और

फ़राख़िये ऐश अता फ़रमाता है मोमिन को भी और काफ़िर को भी हस्बे इक़तजाए हिकमत । हदीस शरीफ़ में है **अल्लाह** तआला फ़रमाता

है मेरे बा'जे मोमिन बन्दे ऐसे हैं कि तवंगरी उन के कुव्वते ईमान का बाइस है अगर मैं उन्हें फ़कीर मोहताज कर दू तो उन के अक़ीदे फ़ासिद

हो जाएं और बा'जे बन्दे ऐसे हैं कि तंगी और मोहताजी उन के कुव्वते ईमान का बाइस है अगर मैं उन्हें गनी मालदार कर दू तो उन के अक़ीदे

ख़राब हो जाएं । 54 : या'नी जिस को अपने आ'माल से नफ़ए आख़िरत मक़सूद हो 55 : उस को नेकियों की तौफ़ीक़ दे कर और उस के

فِي الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ۚ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ

में उस का कुछ हिस्सा नहीं⁵⁸ या उन के लिये कुछ शरीक हैं⁵⁹ जिन्होंने उन के लिये⁶⁰ वोह दीन निकाल दिया है⁶¹

مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ

कि **اللَّهُ** ने उस की इजाज़त न दी⁶² और अगर एक फैसले का वा'दा न होत⁶³ तो यहीं उन में फैसला कर दिया जाता⁶⁴ और बेशक

الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا

ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अज़ाब है⁶⁵ तुम ज़ालिमों को देखोगे कि अपनी कमाइयों से सहमे हुए होंगे⁶⁶

وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَةٍ

और वोह उन पर पड़ कर रहेंगे⁶⁷ और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह जन्नत की

الْجَنَّةِ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۚ

फुलवारियों में हैं उन के लिये उन के रब के पास हैं जो चाहें येही बड़ा फ़ज़ल है

ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۗ

येह है वोह जिस की खुश ख़बरी देता है **اللَّهُ** अपने बन्दों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْبُودَةَ فِي الْقُرْبَىٰ ۗ وَمَنْ يَقْتَرِفْ

तुम फ़रमाओ मैं इस⁶⁸ पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता⁶⁹ मगर क़राबत की महब्वत⁷⁰ और जो नेक

लिये ख़ैरात व ताआत की राहें सहल कर के और उस की नेकियों का सवाब बढ़ा कर । 56 : या'नी जिस का अमल महज़ दुन्या हासिल करने के लिये हो और वोह आख़िरत पर ईमान न रखता हो (مَرْك) 57 : या'नी दुन्या में जितना उस के लिये मुकद्दर किया है । 58 : क्यूं कि उस ने आख़िरत के लिये अमल किया ही नहीं । 59 : मा'ना येह हैं कि क्या कुफ़ारे मक्का उस दीन को कबूल करते हैं जो **اللَّهُ** तआला ने उन के लिये मुक़र्र फ़रमाया या उन के कुछ ऐसे शुरका हैं शयातीन वगैरा 60 : कुफ़री दीनों में से 61 : जो शिर्क व इन्कारे बअूस पर मुशतमिल है । 62 : या'नी वोह दीने इलाही के ख़िलाफ़ है । 63 : और जज़ा के लिये रोज़े क़ियामत मुअय्यन न फ़रमा दिया गया होता 64 : और दुन्या ही में तकज़ीब करने वालों को गिरफ़्तारे अज़ाब कर दिया जाता । 65 : आख़िरत में और ज़ालिमों से मुराद यहां काफ़िर हैं । 66 : या'नी कुफ़ व आ'माले ख़बीसा से जो उन्होंने ने दुन्या में कमाए थे । इस अन्देसे से कि अब उन की सज़ा मिलने वाली है । 67 : ज़रूर उन से किसी तरह बच नहीं सकते डरें या न डरें । 68 : तब्लीगे रिसालत और इशाद व हिदायत 69 : और तमाम अम्बिया का येही तरीका है । शाने नुज़ूल : हुज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से मरवी है कि जब नबिये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** मदीनए तय्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए और अन्सार ने देखा कि हुज़ूर **عَلَيْهِ السَّلَام** के जिम्मे मसारिफ़ बहुत हैं और माल कुछ भी नहीं है तो उन्होंने ने आपस में मशवरा किया और हुज़ूर के हुकूक व एहसानात याद कर के हुज़ूर की ख़िदमत में पेश करने के लिये बहुत सा माल जम्अ किया और उस को ले कर ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और अज़्र किया कि हुज़ूर की बदौलत हमें हिदायत हुई, हम ने गुमराही से नजात पाई, हम देखते हैं कि हुज़ूर के मसारिफ़ बहुत ज़ियादा हैं, इस लिये हम येह माल खुद्दामे आस्ताना की ख़िदमत में नज़्र के लिये लाए हैं कबूल फ़रमा कर हमारी इज़ज़त अफ़ज़ाई की जाए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और हुज़ूर ने वोह अम्वाल वापस फ़रमा दिये । 70 : तुम पर लाज़िम है क्यूं कि मुसल्मानों के दरमियान मुवद्दत व महब्वत वाजिब है जैसा कि **اللَّهُ** तआला ने फ़रमाया : "الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ" और हदीस शरीफ़ में है कि मुसल्मान मिस्ल एक इमारत के हैं जिस का हर एक हिस्सा दूसरे हिस्से को कुव्वत और मदद पहुंचाता है । जब मुसल्मानों में बाहम एक दूसरे के साथ महब्वत वाजिब हुई तो सय्यिदे आलमीन **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के साथ किस क़दर महब्वत फ़र्ज़ होगी । मा'ना येह हैं कि मैं हिदायत व इशाद पर

حَسَنَةً نَّزِدُ لَهُ فِيهَا حُسْنًا ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٢٣﴾ أَمْ يَقُولُونَ

काम करे⁷¹ हम उस के लिये उस में और खूबी बढ़ाएं बेशक **अल्लाह** बख़ाने वाला कद्र फ़रमाने वाला है या⁷² यह कहते हैं कि

اِفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ فَإِن يَّشَاءِ اللَّهُ يَخْتَمِ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۖ وَيَخُ اللَّهُ

उन्होंने ने **अल्लाह** पर झूट बांध लिया⁷³ और **अल्लाह** चाहे तो तुम्हारे दिल पर अपनी रहमत व हिफ़ाज़त की मोहर फ़रमा दे⁷⁴ और मिटाता है

الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٣﴾ وَهُوَ

बातिल को⁷⁵ और हक़ को साबित फ़रमाता है अपनी बातों से⁷⁶ बेशक वोह दिलों की बातें जानता है और वोही है

الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا

जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है⁷⁷ और जानता है जो कुछ

تَفْعَلُونَ ۗ ﴿٢٥﴾ وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ

तुम करते हो और दुआ क़बूल फ़रमाता है उन की जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उन्हें अपने फ़ज़ल से

مِّنْ فَضْلِهِ ۖ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ

और इन्आम देता है⁷⁸ और काफ़िरों के लिये सख़्त अज़ाब है और अगर **अल्लाह** अपने

الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَّوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِن يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَا يَشَاءُ ۗ

सब बन्दों का रिज़क़ वसीअ कर देता तो ज़रूर ज़मीन में फ़साद फैलाते⁷⁹ लेकिन वोह अन्दाज़े से उतारता है जितना चाहे

إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾ وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا

बेशक वोह अपने बन्दों से ख़बरदार है⁸⁰ उन्हें देखता है और वोही है कि मींह उतारता है उन के ना उम्मीद

कुछ उजरत नहीं चाहता लेकिन क़राबत के हुकूक तो तुम पर वाजिब हैं उन का लिहाज़ करो और मेरे क़राबत वाले तुम्हारे भी क़राबती हैं उन्हें

ईजा न दो। हज़रते सईद बिन जुबैर से मरवी है कि क़राबत वालों से मुराद हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की आले पाक है। (بخاری)

मस्अला : अहले क़राबत से कौन कौन मुराद हैं इस में कई कौल हैं एक तो येह कि मुराद इस से हज़रते अली व हज़रते फ़तिमा व हसनैन करीमैन

हैं **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ**। एक कौल येह है कि आले अली व आले अक़ील व आले जा'फ़र व आले अब्बास मुराद हैं और एक कौल येह है कि

हुज़ूर के वोह अकारिब मुराद हैं जिन पर सदका ह़राम है और वोह मुख़्लिसीने बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब हैं, हुज़ूर की अज्वाजे मुत्तह़रात

हुज़ूर के अहले बैत में दाख़िल हैं। **मस्अला** : हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की महब्वत और हुज़ूर के अकारिब की महब्वत दीन के फ़राइज़

में से है। **71** : यहां नेक काम से मुराद या रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की आले पाक की महब्वत है या तमाम उमूरे ख़ैर। **72** :

सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की निस्वत कुफ़फ़ारे मक्का **73** : नुबुव्वत का दा'वा कर के या कुरआने करीम को किताबे इलाही बता कर।

74 : कि आप को उन की बद गोइयों से ईजा न हो। **75** : जो कुफ़फ़ार कहते हैं। **76** : जो अपने नबी **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर नाज़िल फ़रमाई।

चुनान्चे ऐसा ही किया कि उन के बातिल को मिटाया और कलिमए इस्लाम को ग़ालिब किया। **77 मस्अला** : तौबा हर एक गुनाह से वाजिब है

और तौबा की हकीकत येह है कि आदमी बदी व मा'सियत से बाज़ आए और जो गुनाह उस से सादिर हुवा उस पर नादिम हो और हमेशा गुनाह

से मुत्जनिब रहने का पुख़्ता इरादा करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे की हक़ तलफ़ी भी थी तो उस से ब तरीके शरई ओहदा बरआ हो। **78** : या'नी

जितना दुआ मांगने वाले ने त़लब किया था उस से ज़ियादा अ़ता फ़रमाता है। **79** : तकब्बुर व गुरूर में मुब्तला हो कर। **80** : जिस के लिये

قَنُوتًا وَيُنْشِرُ رَحْمَتَهُ ۖ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ

होने पर और अपनी रहमत फैलाता है⁸¹ और वोही काम बनाने वाला है सब खूबियों सराहा और उस की निशानियों से

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيهَا مِنْ دَابَّةٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا

है आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और जो चलने वाले इन में फैलाए और वोह उन के इकठ्ठा करने पर⁸² जब

يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾ وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَ

चाहे कादिर है और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह उस के सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया⁸³ और

يَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٠﴾ وَمَا أَنْتُمْ بِبُعْزِينَ فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَالَكُمْ مِمَّنْ

बहुत कुछ तो मुआफ़ फ़रमा देता है और तुम ज़मीन में काबू से नहीं निकल सकते⁸⁴ और न

دُونَ اللَّهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٣١﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ

अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हारा कोई दोस्त न मददगार⁸⁵ और उस की निशानियों से हैं⁸⁶ दरिया में चलने वालियां

كَالْأَعْلَامِ ﴿٣٢﴾ إِنْ يَشَاءُ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَنَ رَاوَاكِدَ عَلَىٰ ظَهْرِهِ ۗ

जैसे पहाड़ियां वोह चाहे तो हवा थमा दे⁸⁷ कि उस की पीठ पर⁸⁸ ठहरी रह जाए⁸⁹

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣٣﴾ أَوْ يُوبِقُهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَ

बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े साबिर शाकिर को⁹⁰ या उन्हें तबाह कर दे⁹¹ लोगों के गुनाहों के सबब⁹² और

يَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٤﴾ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِمَّنْ

बहुत कुछ मुआफ़ फ़रमा दे⁹³ और जान जाए वोह जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उन्हें⁹⁴ कहीं भागने की

जितना मुक्तजाए हिक्मत है उस को उतना अता फ़रमाता है । 81 : और मींह से नफ़अ देता है और कहूत को दफ़अ फ़रमाता है । 82 :

दृश के लिये । 83 : यह खिताब मोमिनीने मुकल्लफ़ीन से है जिन से गुनाह सरज़द होते हैं, मुराद यह है कि दुन्या में जो तकलीफ़ें और मुसीबतें

मोमिनीन को पहुंचती हैं अक्सर उन का सबब उन के गुनाह होते हैं, उन तकलीफ़ों को **اَللّٰهُ** तआला उन के गुनाहों का कफ़फ़ारा कर देता

है और कभी मोमिन की तकलीफ़ उस के रफ़ू दरजात के लिये होती है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में वारिद है । अम्बिया **السّٰلَم**

जो गुनाहों से पाक हैं और छोटे बच्चे जो मुकल्लफ़ नहीं हैं इस आयत के मुखातब नहीं । **फ़ाएदा** : बा'जे गुमराह फ़िकें जो तनासुख के काइल

हैं इस आयत से इस्तदलाल करते हैं कि छोटे बच्चों को जो तकलीफ़ पहुंचती है इस आयत से साबित होता है कि वोह उन के गुनाहों का नतीजा

हो और अभी तक उन से कोई गुनाह हुवा नहीं तो लाज़िम आया कि इस ज़िन्दगी से पहले कोई और ज़िन्दगी हो जिस में गुनाह हुए हों । यह

बात बातिल है क्यूं कि बच्चे इस कलाम के मुखातब ही नहीं जैसा कि बिल उमूम तमाम खिताब अक़िलीन बालिग़ीन को होते हैं, पस तनासुख

वालों का इस्तदलाल बातिल हुवा । 84 : जो मुसीबतें तुम्हारे लिये मुक़दर हो चुकी हैं उन से कहीं भाग नहीं सकते बच नहीं सकते ।

85 : कि उस की मरज़ी के खिलाफ़ तुम्हें मुसीबत व तकलीफ़ से बचा सके । 86 : बड़ी बड़ी कशितयां 87 : जो कशितयों को चलाती है ।

88 : या'नी दरिया के ऊपर 89 : चलने न पाएं । 90 : साबिर शाकिर से मोमिने मुख़्लस मुराद है जो सख़ी व तकलीफ़ में सब्र करता है और

राहतो ऐश में शुक्र । 91 : या'नी कशितयों को ग़र्फ़ कर दे 92 : जो उस में सुवार हैं । 93 : गुनाहों में से कि उन पर अज़ाब न करे । 94 : हमारे

अज़ाब से ।

مَّحِيصٍ ٣٥ ﴿ فَمَا أُوتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ

जगह नहीं तुम्हें जो कुछ मिला है⁹⁵ वोह जीती दुन्या में बरतने का है⁹⁶ और वोह जो **अल्लाह** के

اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ٣٦ ﴿ وَالَّذِينَ

पास है⁹⁷ बेहतर है और ज़ियादा बाकी रहने वाला उन के लिये जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा करते हैं⁹⁸ और वोह जो

يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ٣٧ ﴿

बड़े बड़े गुनाहों और बे हयाइयों से बचते हैं और जब गुस्सा आए मुआफ़ कर देते हैं

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۖ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ

और वोह जिन्होंने ने अपने रब का हुक्म माना⁹⁹ और नमाज़ क़ाइम रखी¹⁰⁰ और उन का काम उन के आपस के मश्वरे

بَيْنَهُمْ ۖ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ٣٨ ﴿ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ

से है¹⁰¹ और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में खर्च करते हैं और वोह कि जब उन्हें बगावत पहुंचे

يَنْتَصِرُونَ ٣٩ ﴿ وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۖ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ

बदला लेते हैं¹⁰² और बुराई का बदला उसी की बराबर बुराई है¹⁰³ तो जिस ने मुआफ़ किया और काम संवारा तो उस का अज़्र

عَلَى اللَّهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ٤٠ ﴿ وَلَمَنْ ائْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ

अल्लाह पर है बेशक वोह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को¹⁰⁴ और बेशक जिस ने अपनी मज़लूमी पर बदला लिया उन पर

مَا عَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ٤١ ﴿ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ

कुछ मुआख़जे की राह नहीं मुआख़जा तो उन्हीं पर है जो¹⁰⁵ लोगों पर जुल्म करते हैं

95 : दुन्यवी मालो अस्बाब । 96 : सिर्फ़ चन्द रोज़, उस को बका नहीं । 97 : या'नी सवाब वोह 98 शाने नुज़ूल : येह आयत हज़रते अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के हक़ में नाज़िल हुई जब आप ने अपना कुल माल सदका कर दिया और इस पर अरब के लोगों ने आप को मलामत की । 99 शाने नुज़ूल : येह आयत अन्सार के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने ने अपने रब की दा'वत क़बूल कर के ईमान व ताअत को इख़्तियार किया । 100 : इस पर मुदावमत की । 101 : वोह जल्दी और खुदराई नहीं करते । हज़रते हसन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : जो कौम मश्वरा करती है वोह सहीह राह पर पहुंचती है । 102 : या'नी जब उन पर कोई जुल्म करे तो इन्साफ़ से बदला लेते हैं और बदले में हद से तजावुज़ नहीं करते । इन्ने ज़ैद का क़ौल है कि मोमिन दो तरह के हैं एक वोह जो जुल्म को मुआफ़ करते हैं पहली आयत में उन का ज़िक्र फ़रमाया गया, दूसरे वोह जो ज़ालिम से बदला लेते हैं उन का इस आयत में ज़िक्र है । अता ने कहा कि येह वोह मोमिनीन हैं जिन्हें कुफ़फ़ार ने मक्कए मुकर्रमा से निकाला और उन पर जुल्म किया फिर **अल्लाह** तआला ने उन्हें इस सर ज़मीन में तसल्लुत दिया और उन्हीं ने ज़ालिमों से बदला लिया । 103 : मा'ना येह हैं कि बदला क़दरे जिनायत होना चाहिये इस में ज़ियादती न हो और बदले को बुराई कहना मजाज़ है कि सूतन मुशाबेह होने के सबब से कहा जाता है और जिस को वोह बदला दिया जाए उसे बुरा मा'लूम होता है और बुराई के साथ ता'बीर करने में येह भी इशारा है कि अगर्चे बदला लेना जाइज़ है लेकिन "अफ़व" इस से बेहतर है । 104 : हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि ज़ालिमों से वोह मुराद हैं जो जुल्म की इब्तिदा करें । 105 : इब्तिदाअन ।

وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٢﴾ وَ

और ज़मीन में नाहक सरकशी फैलाते हैं¹⁰⁶ उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है और

لَسَنَ صَبْرٍ وَغَفْرٍ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۗ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ

बेशक जिस ने सब्र किया¹⁰⁷ और बख़्शा दिया तो यह ज़रूर हिम्मत के काम हैं और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे

فَمَا لَهُ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهِ ۗ وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّسَٰرًا وَّالْعَذَابَ

उस का कोई रफ़ीक़ नहीं **अल्लाह** के मुक़ाबिल¹⁰⁸ और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब अज़ाब देखेंगे¹⁰⁹

يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيلٍ ۗ وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا

कहेंगे क्या वापस जाने का कोई रास्ता है¹¹⁰ और तुम उन्हें देखोगे कि आग पर पेश किये जाते हैं

خَشِعِينَ مِنَ الدَّلِّ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۗ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا

ज़िल्लत से दबे लचे छुपी निगाहों देखते हैं¹¹¹ और ईमान वाले कहेंगे

إِنَّ الْخٰسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ أَلَا

बेशक हार में वोह हैं जो अपनी जानें और अपने घर वाले हार बैठे क़ियामत के दिन¹¹² सुनते हो

إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ۗ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ أَوْلِيَاءٍ يٰنصُرُونَهُمْ

बेशक ज़ालिम¹¹³ हमेशा के अज़ाब में हैं और उन के कोई दोस्त न हुए कि **अल्लाह** के मुक़ाबिल

مِّنْ دُونِ اللَّهِ ۗ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ۗ اِسْتَجِيبُوا

उन की मदद करते¹¹⁴ और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे उस के लिये कहीं रास्ता नहीं¹¹⁵ अपने रब का

لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمًا لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّجَا

हुक़्म मानो¹¹⁶ उस दिन के आने से पहले जो **अल्लाह** की तरफ़ से टलने वाला नहीं¹¹⁷ उस दिन तुम्हें कोई

106 : तकब्बुर और मअ़ासी का इरतिकाब कर के । 107 : जुल्म व इज़ा पर और बदला न लिया 108 : कि उसे अज़ाब से बचा सके ।

109 : रोज़े क़ियामत 110 : या'नी दुन्या में, ताकि वहां जा कर ईमान ले आए। 111 : या'नी ज़िल्लत व ख़ौफ़ के बाइस आग को दुज्दीदा

(तिरछी) निगाहों से देखेंगे जैसे कोई गरदन ज़दनी (जिस के सर को क़लम करने का हुक़्म हो वोह) अपने क़त्ल के वक़्त तेग़ ज़न (तलवार

चलाने वाले) की तलवार को दुज्दीदा (तिरछी) निगाह से देखता है । 112 : जानों का हारना तो येह है कि वोह कुफ़्र इख़्तियार कर के जहन्नम

के दाइमी अज़ाब में गिरिफ़्तार हुए और घर वालों का हारना येह है कि ईमान लाने की सूरत में जन्मत की जो हूरें उन के लिये नामज़द थीं उन

से महरूम हो गए । 113 : या'नी काफ़िर 114 : और उस के अज़ाब से बचा सकते । 115 : ख़ैर का न वोह दुन्या में हक़ तक पहुंच सके न

आख़िरत में जन्मत तक । 116 : और सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की फ़रमां बरदारी कर के तौहीद व इबादते इलाही

इख़्तियार करो 117 : इस से मुराद या मौत का दिन है या क़ियामत का ।

يَوْمٍ ذِي مَعَادٍ ۝ فَإِنْ أَعْرَضُوا فَلْيَقْرَأُوا عَلَيْهِمْ ۝ فَإِنْ آوُوا إِلَيْكَ فَاجْزِهِمْ ۝ فَإِنْ كَانُوا مِنْكُم مِّنْ قَبْلِ هَٰذَا مِن قَوْمٍ مَّيْمَنٍ ۝ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْتُونَ الْوَيْلَةَ ۝ وَالَّذِينَ يَمُنُّونَ بِالْغَيْبِ ۝ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ ۝

पनाह न होगी न तुम्हें इन्कार करते बने¹¹⁸ तो अगर वोह मुंह फेरे¹¹⁹ तो हम ने तुम्हें उन पर निगहबान बना कर

حَفِظْنَا ۝ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ۝

नहीं भेजा¹²⁰ तुम पर तो नहीं मगर पहुंचा देना¹²¹ और जब हम आदमी को अपनी तरफ से किसी रहमत का मजा देते हैं¹²²

فَرِحَ بِهَا ۝ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ ۝

इस पर खुश हो जाता है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे¹²³ बदला उस का जो उन के हाथों ने आगे भेजा¹²⁴ तो इन्सान बड़ा

كَفُورًا ۝ لِلَّهِ مَلِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۝ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۝ يَهَبُ ۝

नाशुक्रा है¹²⁵ **اللَّهُ** ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत¹²⁶ पैदा करता है जो चाहे जिसे चाहे

لَسَنٌ يَّشَاءُ إِنَّا نَأْتِيهِمْ لَسَنًا ۝ وَيَهَبُ لِمَن يَشَاءُ الذُّكُورَ ۝ أَوْ يَزْوِجُهُمْ ۝

बेटियां अता फरमाए¹²⁷ और जिसे चाहे बेटे दे¹²⁸ या दोनों मिला दे

ذُكْرَانًا وَإِنَّا نَأْتِيهِمْ لَسَنًا ۝ وَيَجْعَلُ مَن يَشَاءُ عَقِيْبًا ۝ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا ۝

बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे¹²⁹ बेशक वोह इल्म व कुदरत वाला है और किसी

كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُكَلِّمَهُ اللَّهُ ۝ إِلَّا وَحِيًّا أَوْ مَن وَّرَأَىٰ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ ۝

आदमी को नहीं पहुंचता कि **اللَّهُ** उस से कलाम फरमाए मगर वह्य के तौर पर¹³⁰ या यूं कि वोह बशर पर्दा अज़मत के उधर हो¹³¹ या कोई

118 : अपने गुनाहों का या'नी उस दिन कोई रिहाई की सूरत नहीं न अज़ाब से बच सकते हो न अपने आ'माले कबीहा का इन्कार कर

सकते हो जो तुम्हारे आ'माल नामों में दर्ज हैं । **119** : ईमान लाने और इताअत करने से **120** : कि तुम पर उन के आ'माल की हिफाज़त

लाज़िम हो । **121** : और वोह तुम ने अदा कर दिया । **122** : (وَكَانَ هَٰذَا قَبْلَ الْأَمْرِ بِالْحِجَابِ) ख़्वाह वोह दौलतो सरवत हो या सिहहतो

आफ़ियत या अम्नो सलामत या जाहो मर्तबत **123** : या और कोई मुसीबत व बला मिस्ल कहत व बीमारी व तंगदस्ती वगैरा के रूनुमा

हो । **124** : या'नी उन की ना फरमानियों और मा'सियतों के सबब से । **125** : ने'मतों को भूल जाता है । **126** : जैसा चाहता है तसरफ़

फरमाता है, कोई दख़ल देने और ए'तिराज़ करने की मजाल नहीं रखता । **127** : बेटा न दे । **128** : दुख़तर न दे **129** : कि उस की औलाद

ही न हो, वोह मालिक है, अपनी ने'मत को जिस तरह चाहे तक्सीम करे जिसे जो चाहे दे । अम्बिया **السَّلَام** में भी येह सब सूरतें पाई

जाती हैं, हज़रते लूत व हज़रते शुऐब **عَلَيْهِمَا السَّلَام** की सिर्फ़ बेटियां थीं कोई बेटा न था और हज़रते इब्राहीम **وَالسَّلَام** के सिर्फ़

फरज़न्द थे कोई दुख़तर हुई ही नहीं और सय्यिदे अम्बिया हबीबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को **اللَّهُ** तआला ने चार

फरज़न्द अता फरमाए और चार साहिब जादियां और हज़रते यहुया और हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के कोई औलाद ही नहीं । **130** : या'नी बे

वासिता इस के दिल में "इल्का" फरमा कर और "इल्हाम" कर के बेदारी में या ख़्वाब में इस में वह्य का वुसूल बे वासिता सम्अ के

है और आयत में "وَالْوَحْيَا" से येही मुराद है, इस में येह कैद नहीं कि इस हाल में सामेअ मुतकल्लिम को देखता हो या न देखता हो ।

मुजाहिद से मन्कूल है कि **اللَّهُ** तआला ने हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** के सीनए मुबारक में ज़बूर की वह्य फरमाई और हज़रते इब्राहीम

عَلَيْهِ السَّلَام को ज़ब्दे फरज़न्द की ख़्वाब में वह्य फरमाई और सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से मे'राज में उसी तरह की वह्य फरमाई

जिस का "فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ" में बयान है । येह सब इसी किसम में दाख़िल हैं । अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** के ख़्वाब हक़ होते हैं जैसा कि हदीस

शरीफ़ में वारिद है कि अम्बिया के ख़्वाब वह्य हैं । **131** : या'नी रसूल पसे पर्दा उस का कलाम सुने, इस तरीके वह्य में भी कोई वासिता नहीं मगर सामेअ को इस हाल में मुतकल्लिम का दीदार नहीं होता । हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** इसी तरह

رَسُولًا فَيُوحِي بِأَذْنِهِ مَا يَشَاءُ ۗ إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ ۝٥١ وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا

फ़िरिस्ता भेजे कि वोह उस के हुक्म से वह्य करे जो वोह चाहे¹³² बेशक वोह बुलन्दी व हिक्मत वाला है और यूही हम ने तुम्हें वह्य

إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۗ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيَّانُ وَ

भेजी¹³³ एक जांफ़िज़ा चीज़¹³⁴ अपने हुक्म से उस से पहले न तुम किताब जानते थे न अहकामे शरअ की तफ़्सील

لَكِن جَعَلْنَاهُ نُورًا نُّهْدِي بِهِ مَن نَّشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۗ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي

हां हम ने उसे¹³⁵ नूर किया जिस से हम राह दिखाते हैं अपने बन्दों से जिसे चाहते हैं और बेशक तुम ज़रूर

إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝٥٢ صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

सीधी राह बताते हो¹³⁶ अल्लाह की राह¹³⁷ कि उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ

الْأَرْضِ ۗ آتَىٰ إِلَى اللَّهِ تَصَيِّرَ الْأُمُورِ ۝٥٣

ज़मीन में सुनते हो सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं

﴿١٩ آيَاتُهَا﴾ ﴿٢٣ سُورَةُ الرَّحْرِفِ مَكِّيَّةٌ ٦٣﴾ ﴿٢٠ رُكُوعَاتُهَا ٤﴾

सूरए जुख़रुफ़ मक्किय्या है, इस में नवासी आयतों और सात रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

حَمِّ ۝١ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝٢ إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ

रोशन किताब की क़सम² हम ने उसे अरबी कुरआन उतारा कि

تَعْقِلُونَ ۝٣ وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيَّنَا عَلِيُّ حَكِيمٍ ۝٤ أَفَضْرِبُ

तुम समझो³ और बेशक वोह अस्ल किताब में⁴ हमारे पास ज़रूर बुलन्दी व हिक्मत वाला है तो क्या हम तुम

के कलाम से मुशरफ़ फ़रमाए गए। शाने नुज़ूल : यहूद ने हुज़ुरे पुरनूर सय्यिदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से कहा था कि अगर आप नबी हैं

तो अल्लाह तआला से कलाम करते वक़्त उस को क्यूं नहीं देखते जैसा कि हज़ुरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام देखते थे ? हुज़ुर सय्यिदे

आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने जवाब दिया कि हज़ुरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام नहीं देखते थे और अल्लाह तआला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई।

मस्अला : अल्लाह तआला इस से पाक है कि उस के लिये कोई ऐसा पर्दा हो जैसा जिस्मानिय्यात के लिये होता है, इस पर्दे से मुराद

सामेअ का दुन्या में दीदार से महज़ूब होना है। 132 : इस तरीके वह्य में रसूल की तरफ़ फ़िरिश्ते की वसातत है। 133 : ऐ सय्यिदे आलम

खातमुल मुर्सलीन صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! 134 : या'नी कुरआने पाक जो दिलों में ज़िन्दगी पैदा करता है। 135 : या'नी कुरआन शरीफ़ को 136 :

या'नी दीने इस्लाम। 137 : जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये मुकरर फ़रमाई। 1 : सूरए जुख़रुफ़ मक्किय्या है, इस सूरत में सात रुकूअ,

नवासी आयतों और तीन हज़ार चार सो हर्फ़ हैं 2 : या'नी कुरआने पाक की जिस में हिदायत व ज़लालत की राहें जुदा जुदा और वाज़ेह कर

दों और उम्मत के तमाम शरई ज़रूरिय्यात को बयान फ़रमा दिया। 3 : उस के मअानी व अहकाम को। 4 : अस्ल किताब से मुराद लौहे